मधुबन ओम् शान्ति अंक 355 फरवरी 2022

पत्र-पुष्प

"सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा द्वारा विश्व में सुख, शान्ति और शीतलता की किरणें फैलाओ"
दादी जी की शुभ प्रेरणायें (21-01-22)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा पवित्रता की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी को धारण कर अपने समय, संकल्प, श्वांस की बचत करने वाले होलीहंस, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी बाबा के नूरे रत्न, ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठे बाबा ने हम बच्चों को अपने अनादि-आदि स्वरूप की, अपने स्वधर्म की स्मृति दिलाई है। सभी इस ब्राह्मण जीवन में पवित्रता की पर्सनैलिटी धारण कर अपनी इनर्जी, समय, संकल्प सब सफल करते चलो। समय प्रमाण अब कुछ भी व्यर्थ न जाये। अब छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिजी नहीं करना है। बाबा कहते बच्चे, अपवित्रता की बातों को सुनते भी नहीं सुनना, देखते भी नहीं देखना। संगमयुग का यह समय बहुत-बहुत अमूल्य है, हर घड़ी पदमों की कमाई जमा कराने वाली है, इसलिए निरन्तर याद, निरन्तर सेवा की विधि द्वारा मन-बुद्धि को सदा बिजी रख, व्यर्थ की अपवित्रता से बचना है। विशेष एकान्तवास करते, एक बाबा दूसरा न कोई, एक की लगन में मगन रह, परमात्म छत्रछाया के नीचे निर्भय और निश्चिंत रहना है। ड्रामा की हर सीन को कल्याणकारी समझ बहुत साक्षी होकर देखना है।

बोलो, हमारी मीठी-मीठी बहिनें, बाबा के स्मृति मास में सभी ने लवलीन स्थिति का अच्छा अनुभव किया है ना। अब तो फालो फादर करते हुए, ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की घड़ियां हैं। जैसे ब्रह्मा बाबा ने विस्तार को सार में समेटा, सेवाओं में रहते, समाचार सुनते, सुनाते एकान्तवासी बनने का अभ्यास किया। एक घण्टे के समाचार को 5 मिनट में सार समझ बच्चों को खुश किया और अपनी अन्तर्मुखी, एकान्तवासी स्थिति का अनुभव कराया, ऐसे हम सबको भी फालो फादर करना है। हर एक को ऐसा एक्जैम्पुल बनना है जो एक को देख दूसरा अपने आप सीख जाए, अब मुख से कहने की बजाए शुभ भावना के संकल्प द्वारा सेवा करने का समय है इसलिए सभी अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा, श्रेष्ठ वृत्तियों द्वारा विश्व के वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा करते चलो। हर एक यही शुभ संकल्प करे कि मुझे

1- तन-मन और दिल से सदा बेदाग अर्थात् स्वच्छ व पवित्र बनना है। जरा भी अस्वच्छता का नामनिशान न रहे।

2- सम्पूर्ण पवित्रता को धारण कर अपने मस्तक से चमकती हुई मणी का, रूहानियत से चमकते हुए नयनों का, हर बोल से मधुरता का, कर्म से सन्तुष्टता और निर्मानता का अनुभव कराना है।

3- किसी भी प्रकार की परिस्थिति में, अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे, पीछे नहीं हटेंगे, सम्पूर्ण पवित्रता का पालन करेंगे।

अभी हम सबके शिव भोलानाथ बाबा की जयन्ती समीप आ रही है, सभी इस महापर्व को खूब धूमधाम से मनाते, एक दो को बधाईयां देते, प्रतिज्ञायें करते, तो इन्हीं तीन बातों का शुभ संकल्प लेते हुए परमात्म प्रत्यक्षता करनी है। इनएडवांस सबको शिव अवतरण की कोटि-कोटि बधाई हो। सबको याद..

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

सम्पूर्ण पवित्रता वा स्वच्छता को धारण करो

1) आप होलीहंस ब्राह्मण सफेद वस्त्रधारी, साफ दिल अर्थात् स्वच्छता-स्वरुप हो इसलिए तन-मन और दिल से सदा बेदाग अर्थात् स्वच्छ व पवित्र बनो। **A-** तन की स्वच्छता अर्थात् सदा इस तन को आत्मा का मन्दिर समझ उस स्मृति से स्वच्छ रखना। **B-** मन की स्वच्छता वा पवित्रता अर्थात् मन में किसी भी प्रकार का अशुद्ध संकल्प न चले। **C-** दिल की स्वच्छता वा पवित्रता सच्चाई-सफाई है। **D-** सम्बन्ध की स्वच्छता अर्थात् सन्तुष्टता। सन्तुष्टता की निशानी स्वयं भी मन से हल्के और खुश और दूसरे भी उनसे खुश।

2) पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं है, सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प में भी कोई विकार टच न हो। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता है। ऐसे मन-बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग, इसको भी अपवित्रता कहा जाता है। पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले, रॉयल्टी वाले मन-बुद्धि से भी इस बुराई को टच नहीं करते, जैसे वैष्णव कभी बुरी चीज़ को टच नहीं करते हैं। ऐसे आप ब्राह्मण वैष्णव आत्मायें बुराई को भी टच नहीं कर सकती, यही आपकी तपस्या है।

3) ब्राह्मण जीवन में पवित्रता की ऐसी पर्सनैलिटी धारण करो जो आपकी इनर्जी, समय, संकल्प सब सफल होता रहे। कुछ भी व्यर्थ न जाए। छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखना। अपवित्रता की बातों को सुनते हुए नहीं सुनना। देखते हुए नहीं देखना। जैसे जिन चीज़ों से आपका कनेक्शन नहीं है, उन्हें देखते हुए नहीं देखते हो। रास्ते पर जाते हो, कहीं कुछ दिखाई देता है परन्तु आपके मतलब की बात नहीं है, तो देखते हुए नहीं देखते हो। साइडसीन समझ कर पार कर लेते हो, ऐसे जो बातें सुनते हो, देखते हो, आपके काम की नहीं हैं, तो सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए नहीं देखो।

4) पावन तो आजकल के गाये हुए महात्मायें भी बनते हैं लेकिन आप श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें हाइएस्ट होली (पावन) बनते हो अर्थात् संकल्प-मात्र, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता वृत्ति को, दृष्टि को पावन स्थिति से नीचे नहीं ला सकती है। हर संकल्प अर्थात् स्मृति पावन होने के कारण वृत्ति, दृष्टि स्वत: ही पावन हो जाती है। न सिर्फ आप पावन बनते हो लेकिन प्रकृति को भी पावन बना रहे हो इसलिए पावन प्रकृति के कारण भविष्य अनेक जन्म शरीर भी पावन मिलते हैं।

5) पवित्रता ब्राह्मण जन्म का स्वधर्म है। पवित्रता का संकल्प ब्राह्मण जन्म का लक्ष्य और लक्षण है। ब्राह्मणों का धर्म अर्थात् मुख्य धारणा है - सम्पूर्ण पवित्रता। सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र न हो। ऐसी श्रेष्ठ धारणा करने वाले ही सच्चे ब्राह्मण कहलाते हैं, इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाएं पर धर्म न जाए।' किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे, पीछे नहीं हटेंगे।

6) निरन्तर अतीन्द्रिय सुख और स्वीट साइलेन्स की अनुभूति का विशेष आधार - पवित्रता है। पवित्रता नम्बरवार है तो इन अनुभूतियों की प्राप्ति भी नम्बरवार है। अगर पवित्रता नम्बरवन है तो बाप द्वारा अनुभूतियों की प्राप्ति भी नम्बरवन है।

7) ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार, नवीनता, अलौकिकता वा जीवन का श्रृंगार पवित्रता है। ब्राह्मण जीवन की चैलेन्ज ही है काम-जीत। यही असम्भव से सम्भव कर दिखाने की, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ ज्ञान दाता की निशानी है। जैसे नामधारी ब्राह्मणों की निशानी चोटी और जनेऊ है, वैसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी पवित्रता और मर्यादायें हैं।

8) ब्राह्मण जीवन में पहले स्मृति की स्वच्छता अर्थात् पवित्रता चाहिए। उसके बाद वृत्ति और दृष्टि की। जब स्मृति में पवित्रता आ गई कि मैं पूज्य आत्मा हूँ, तो पूज्य आत्मा अर्थात् सम्पूर्ण निर्विकारी... उनकी दृष्टि में सभी के प्रति यही रहता कि यह परम पूज्य आत्मायें हैं वा पूज्य बनना है। किसी भी पूज्य आत्मा के प्रति यदि अपवित्रता अर्थात् दैहिक दृष्टि जाती है तो यह महा-महा महापाप है जो वियोगी बना देती है।

9) आप ब्राह्मणों की सबसे पहली प्रवृत्ति है अपने देह की प्रवृत्ति। तो पहले इस प्रवृत्ति को अर्थात् देह की हर कर्मेन्द्रिय को पवित्र बनाना है। जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद की

हो, चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र प्रवृत्ति नहीं बना सकेंगे।

10) जितने भी ब्राह्मण हैं हरेक ब्राह्मण चैतन्य शालिग्राम का मन्दिर है, चैतन्य शक्ति मन्दिर है, ऐसे मन्दिर समझते हुए इनको शुद्ध पवित्र बनाओ। अभी के पुरुषार्थ के समय प्रमाण व विश्व के सम्पन्न परिवर्तन के समय प्रमाण इस समय कोई भी कर्मेन्द्रिय द्वारा प्रकृति व विकारों के वशीभूत नहीं होना चाहिए ।

पवित्रता के महत्व को जान महान बनो

11) पवित्रता संगमयुगी ब्राह्मणों के महान जीवन की महानता है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है। जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वांस चलना आवश्यक है। श्वांस नहीं तो जीवन नहीं। ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वांस है पवित्रता। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउन्डेशन पवित्रता है।

12) आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है। सर्व संगमयुगी प्राप्तियों का आधार पवित्रता है, पूज्य-पद पाने का आधार भी पवित्रता है। बापदादा अब एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं। रूहानियत से चमकते हुए नयन देखने चाहते हैं, बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं और कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं।

13) ब्राह्मण जीवन का जीय-दान ही पवित्रता है। आदि-अनादि स्वरुप भी पवित्रता है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। ब्राह्मण जीवन की महानता पवित्रता है। ऐसी महान चीज़ को अपनाने में मेहनत नहीं करो, हठ से नहीं अपनाओ।

14) यह पवित्रता आपके जीवन का वरदान है, अपनी निजी वस्तु है। पराई चीज़ अपवित्रता है न कि पवित्रता। बाप का वरदान पवित्रता है, रावण का श्राप अपवित्रता है। आपका स्व-स्वरूप पवित्र है, स्वधर्म पवित्रता है, आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। स्वदेश पवित्र देश है। स्वराज्य पवित्र राज्य है। स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है। कर्मेन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है, बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठयोग से छूट जायेंगे।

15) पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है, जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति की अनुभूति अवश्य होगी। मंसा संकल्प में पवित्रता है तो मन्सा में सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप की अनुभूति होगी। पवित्रता के सम्पूर्णता की परिभाषा है सदा स्वयं में भी सुख-शान्ति स्वरूप और दूसरों को भी सुख-शान्ति की प्राप्ति का अनुभव कराने वाले। ऐसी पवित्र आत्मा अपनी प्राप्ति के आधार पर औरों को भी सदा सुख और शान्ति, शीतलता की किरणें फैलाने वाली होगी।

16) पवित्रता की शक्ति इतनी महान है जो अपनी पवित्र मंसा अर्थात् शुद्ध वृत्ति द्वारा प्रकृति को भी परिवर्तन कर लेते। मंसा पवित्रता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है - प्रकृति का भी परिवर्तन। स्व परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन। प्रकृति के पहले व्यक्ति। तो व्यक्ति परिवर्तन और प्रकृति परिवर्तन - इतना प्रभाव है मंसा पवित्रता की शक्ति का।

17) फर्स्ट वा एयरकन्डीशन में जाने का सिर्फ एक संकल्प का साधन है। वह एक संकल्प है -'मैं हूँ ही ओरीज्नल पवित्र आत्मा।' ओरीज्नल स्वरूप अपवित्रता नहीं है। अनादि और आदि दोनों काल का ओरीज्नल स्वरूप पवित्र है। अपवित्रता तो आर्टीफिशल है, रीयल नहीं है। शूद्रों की देन है। शूद्रों की चीज़ ब्राह्मण कैसे यूज़ कर सकते।

18) वरदाता और वरदानी आत्मायें दोनों सदा कम्बाइन्ड रूप में रहें तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिमान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। सदा बाप और आप युगल रूप में रहो। सिंगल नहीं, जब सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है। नहीं तो पवित्रता का सुहाग और श्रेष्ठ भाग्य सदा आपके साथ है।

19) सदा यह संकल्प रखो कि मैं अनादि आदि रीयल रूप में पवित्र आत्मा हूँ। किसी को भी देखो तो उसका भी अनादि आदि रीयल रूप देखो। रीयल को रियलाइज करो, तो अपवित्र संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होगी।

20) दु:ख-अशान्ति की उत्पत्ति अपवित्रता से होती है। जहाँ अपवित्रता नहीं वहाँ दु:ख अशान्ति कहाँ से आई। आप सब पतित-पावन बाप के बच्चे मास्टर पतित-पावन हो, तो जो औरों को पतित से पावन बनाने वाले हैं वह स्वयं तो पावन होंगे ही। ऐसी पावन पवित्र आत्माओं के पास सुख और शान्ति स्वत: ही है। तो पावन आत्मायें, श्रेष्ठ आत्मायें, विशेष आत्मायें, विश्व में महान् आत्मायें हैं, सबसे बड़े ते बड़ी महानता है ही पावन बनना। आज भी इसी महानता के आगे

सभी सिर झुकाते हैं।

21) अपना निजी-स्वरूप व वरदानी स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो अपवित्रता और विस्मृति का नाम-निशान समाप्त हो जायेगा। विस्मृति व अपवित्रता क्या होती है, अब इसकी अविद्या होनी चाहिए क्योंकि यह संस्कार व स्वरूप आपका नहीं है बल्कि आपके पूर्व जन्म का था। अभी आप ब्राह्मण हो, ये तो शूद्रों के संस्कार व स्वरूप हैं ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरे के संस्कार अनुभव होना, इसको कहा जाता है - न्यारा और प्यारा।

22) जैसे देह और देही दोनों अलग-अलग दो वस्तुएं हैं, लेकिन अज्ञान-वश दोनों को मिला दिया है; मेरे को मैं समझ लिया है और इसी गलती के कारण इतनी परेशानी, दु:ख और अशान्ति प्राप्त की है। ऐसे ही यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो ब्राह्मणपन के नहीं, शूद्रपन के हैं, इनको भी मेरा समझने से माया के वश हो जाते हो और फिर परेशान होते हो।

23) बाप-समान बनना है वा बाप के समीप जाना है, तो अपवित्रता अर्थात् काम महाशत्रु स्वप्न में भी वार न करे। सदा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वत: स्वरूप में हो। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति-स्वरूप स्थिति से नीचे नहीं आओ।

24) आप सबकी पहली प्रवृत्ति है अपनी देह की प्रवृत्ति, फिर है देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति। तो पहली प्रवृत्ति - देह की हर कर्मेन्द्रिय को पवित्र बनाना है। जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद की हो, चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र नहीं बना सकेंगे। तो पहले अपने आपसे पूछो कि अपने शरीर रुपी घर को अर्थात् संकल्पों को, बुद्धि को, नयनों को और मुख को रुहानी अर्थात् पवित्र बनाया है? ऐसी पवित्र आत्मायें ही महान हैं।

25) पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं है लेकिन ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता हो, इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी और ब्रह्माचारी। हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्व हो। हर कर्म में, कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो - इसको कहा जाता है ब्रह्माचारी।

26) ''मैं परम पवित्र आत्मा हूँ''- सदा अपने इस स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो। तो सहज वरदानी हो जायेंगे, यह सहज आसन है। इस आसन पर रहने से पवित्रता की झलक और फलक स्वत: दिखाई देगी क्योंकि स्वमान के आगे देह-अभिमान आ नहीं सकता।

27) ईश्वरीय सेवा का बड़े-से-बड़ा पुण्य है – पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है क्योंकि किसी आत्मा को आत्म-घात महापाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्म-घात है। पवित्रता जीय-दान है। पवित्र बनो और बनाओ - यही महादान कर पुण्य आत्मा बनो।

28) अभी दृष्टि-वृत्ति में पवित्रता को और भी अण्डरलाइन करो लेकिन मूल फाउण्डेशन - अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ। तो आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जायेगी। अगर क्यों, क्या में जायेंगे, तो न आपकी माया जायेगी न दूसरे की जायेगी।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"ज्वालामुखी योग सर्व शक्तियों से सम्पन्न है, उसमें सेवा का स्वरूप भी इमर्ज है"

(गुल्जार दादी जी 2006)

चार ही सबजेक्ट में हर एक परिवर्तन का लक्ष्य लेकर ज्वालामुखी योग तपस्या कर रहे हो। चारों ही सबजेक्ट स्वरूप में लाने हैं। ज्ञान केवल वर्णन के लिए नहीं है लेकिन उसे स्वरूप में लाना है। स्वरूप में लाना अर्थात् जो भी हम बोल बोलें, कर्म करें, संकल्प करें वो समझ करके करें, उसका फायदा नुकसान आदि ध्यान में रखकर करें। ऐसे योग की भी बाबा जो भिन्न-भिन्न स्टेज सुनाते हैं, तो योग को समय अनुसार कार्य में लगाना, माना उस स्थिति में स्थित होना, यह है इस सब्जेक्ट को प्रैक्टिकल में लाना। ऐसे ही धारणायें हमारी चलन और चेहरे से दिखाई दें। जैसे ब्रह्मा बाबा के चेहरे से लगता था

कि विशेष आत्मा है। सारे झुण्ड में भी बाबा अगर खड़ा हो तो न्यारा लगता था। सेवा की सबजेक्ट में भी बाबा लास्ट तक अखण्ड सेवाधारी रहे। तो हम भी चार ही सब्जेक्ट को प्रैक्टिकल में लायें।

संगठन की शक्ति से उमंग-उत्साह आता है। संगठन में हम एक दो की विशेषता को भी देखते हैं। यह कमाल है बाबा की जो हरेक बच्चे को कोई न कोई विशेषता दी है।

याद की पावरफुल स्टेज है ज्वालामुखी स्टेज, इसमें स्वयं की भी स्थिति है और सेवा की भी क्योंकि लाइट हाउस चारों ओर रास्ता दिखाता है। ज्वालामुखी स्थिति का अर्थ है - हम आत्मा भी लाइट है, बाबा भी लाइट है। नॉलेज को भी लाइट कहा जाता है। तो लाइट हाउस ज्ञान-स्वरूप स्थिति है। उस स्थिति में जो सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम की प्राप्ति होती है वह सर्व आत्माओं को अपनी स्थिति द्वारा अनुभव कराना, ज्वालामुखी योग का अर्थ है - उस स्वरूप में स्थित होकर सेवा करना। वो स्वरूप जब इमर्ज होता है तो आटोमेटिक लाइट पहुँचती है यानि वायुमण्डल बनता है, उनको वायब्रेशन पहुंचता है। माइट हाउस माना जिसको जो शक्ति चाहिए अपने आप मिलेगी। ज्वालामुखी योग के समय यह स्मृति में नहीं आयेगा कि इसको कौन सी शक्ति चाहिए, उसको कौन सी शक्ति चाहिए। जब हम मास्टर सर्वशक्तिवान बनकर बैठते हैं तो जिसको जिस शक्ति की आवश्यकता होती है उसको वो पहुंचती है। जैसे सूर्य उदय होता है, सूर्य की किरणें अपना काम करती हैं। एक ही टाइम पर कहाँ पानी बरसाती हैं, कहाँ सुखाती हैं, कहाँ शक्ति देती हैं, कहाँ रोशनी देती हैं। आटोमेटिकली होता है, सूर्य को सोचना नहीं पड़ता है। ऐसे ही जब हम आदि-अनादि स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तो आटोमेटिक हमारे से जिस आत्मा को जो चाहिए वो प्राप्त हो जाता है।

यह भी योग ही है लेकिन पावरफुल है। वास्तव में बीजरूप की स्थिति भी पावरफुल है, लेकिन उसमें सर्व शक्तियाँ, गुण बीज के रूप में समाये रहते हैं और ज्वालामुखी योग में सेवा का इमर्ज रूप है। सर्व शक्तियाँ इमर्ज हैं, जो जिसको चाहिए वो पहुंच रहा है। है वो ही लेकिन स्टेज भिन्न है।

हम अपनी धारणाओं से योग की भिन्न-भिन्न स्टेज का अनुभव करते रहें। मनन करने की शक्ति भी योग है, रुहरिहान करेंगे तो भी बाबा से ही करेंगे। याद तो हर स्टेज में बाबा की ही है। लेकिन हरेक का समय प्रति समय मूड भी होता है और एक जैसा करने से कभी बोर भी हो जाते हैं इसलिए बाबा ने विस्तार के रूप में बना के दिया है। अच्छा यह नहीं तो यह करो। मतलब अन्दर रहो, बाहर नहीं जाओ। वेस्ट थॉट तो नुकसान करता है ना। तो मन-बुद्धि को बिजी रखने के लिए बाबा ने भिन्न-भिन्न स्टेज विस्तार में बताई हैं।

ज्वालामुखी योग माना अपना अनादि स्वरूप स्मृति में इमर्ज रहे। मेरा अनादि स्वरूप लाइट है। लाइट का अर्थ हल्का और प्रकाश है। जिस समय हम लाइट हाउस रूप स्थिति में बैठते हैं उस समय हम नेचरल लाइट बन जाते हैं। अगर किसी कारण से आप एकदम ज्योति रूप में स्थित नहीं हो सकते हो तो कर्म करते फरिश्ते रूप की लाइट का शरीर धारण करो। ये पांच तत्वों के बजाय, लाइट का शरीर है, उस रूप में स्थित रहो। यही ज्वालामुखी योग की विधि है।

इसके लिए सिर्फ ''मैं और मेरा'' का ध्यान रखना है। हम सब सर्विस के निमित्त हैं लेकिन निमित्त भाव में रहते हैं? निमित्त भाव हल्का बनाता है। अगर मेरा और मैं आ जाता है तो यही बोझ है। इससे हल्का होने की विधि बाबा ने बहुत अच्छी सिखाई है - जब भी मैं कहो, तो उसमें मैं आत्मा एड करो और जब मेरा शब्द बोलते हो तो उसमें मेरे के साथ मेरा बाबा एड करो। मैं भले कहो, उसमें आत्मा याद आ जाये, मेरा कहो तो बाबा याद आ जाये। तो पहले यह चेक करने से ज्वालामुखी योग द्वारा स्व का परिवर्तन कर सकते हैं।

ज्वालामुखी माना पावरफुल योग जिससे पुराने संस्कार जलकर भस्म हो सकते हैं। आग तेज होगी तो जलकर नाम-निशान खत्म होगा। अगर आग ढीली है तो आधा जलेगा, आधा रह जायेगा। ज्वालामुखी योग माना पावरफुल, लाइट-माइट, शक्तियाँ, सुख शान्ति, आनन्द सब इमर्ज हों, उससे वायब्रेशन फैलें।

ऐसी स्थिति बनाने के लिए कुछ बातों की चेकिंग जरूरी है -

अमृतवेले से लेकर जो बाबा के डायरेक्शन है, श्रीमत है, उस श्रीमत प्रमाण हम कहाँ तक चलते हैं? योग के लिए भी टाइम फिक्स हो। रोज़ का अभ्यास जरूरी है। मुरली सुनते ऐसा अनुभव हो कि बाबा पर्सनल मेरे से बात कर रहा है। फिर हर कर्म करते दफ्तर, सेन्टर सब निमित्त भाव से सम्भालना है। निमित्त भाव, निर्मान भाव और निर्मल वाणी ये तीन बातें हमारे हर कर्म में होनी चाहिए। यह श्रीमत बाबा ने दे दी है। फिर अगर सेवा करो तो सेवा में भी खुद पहले उस स्वरूप में स्थित होकर उसको अनुभव कराओ। सेवा के प्रति भी बाबा ने ये अनुभव का इशारा दिया है, दूसरा निमित्त बन कर निर्मल वाणी से सेवा करनी है तभी हम ज्वालामुखी योग को प्रैक्टिकल में

ला सकेंगे। फिर हम एक ही स्थान पर बैठकर लाइट-माइट हाउस बनके सारे विश्व की आत्माओं को शक्ति दे सकते हैं। यह मन्सा सेवा ही है, सिर्फ पावरफुल योग हो इसलिए बाबा ने ज्वालामुखी योग कहा है। जिसमें और कोई बात नहीं हो, कोई भी संस्कार हमारा इमर्ज न हो। तो ज्वालामुखी योग से स्व और सेवा में डबल फायदा हो जायेगा। ओम् शान्ति।

प्रश्नः- आप जब फरिश्ता स्वरूप की बॉडी में बाबा से मिलती हैं, तो उस समय की फीलिंग क्या होती है?

उत्तरः- फरिश्ता माना लाइट, जब हम वतन में जाते हैं तो बॉडी पूरी ही दिखाई देती है, नैन चैन वही होते हैं लेकिन उस सूक्ष्म फरिश्ते स्वरूप को अगर टच करेंगे तो उसमें हड्डी मास नहीं होता है, लाइट की ही बॉडी है। अनुभव तो साकार जैसा ही होता है। लेकिन यह दिव्य दृष्टि से होता है। आप जब मिलन मनाते हैं तो वह दिव्य बुद्धि द्वारा मनाते हैं। इसमें थोड़ा अन्तर तो रहता ही है। वहाँ जब हम फरिश्ते रूप में हो जाते हैं तो मूवी की भाषा भी समझना सहज हो जाता है।

फरिश्ता रूप बाबा इसीलिए कहता है, क्योंकि बॉडी कान्सेस होने से कई विकार पैदा हो जाते हैं। लाइट की बाडी में अगर हम चलते हैं तो कोई भी प्रकार के वायुमण्डल, प्रकृति या विकारों से परे हैं। फरिश्ता स्वरूप में रहने से हमको आटोमेटिक सूक्ष्म लोक की स्मृति रहती है।

(दादी जानकी जी द्वारा मिली हुई मधुर शिक्षायें

"क्वेश्चन मार्क छोड़ मम्मा बाबा के समान बड़ी दिल, सच्ची दिल, रहमदिल वाले बनो"

हम सभी के दिल से क्या निकलता है? शुक्रिया बाबा आपका। बाबा आपका जितना शुक्रिया मानें उतना कम है। आज के जमाने में थैंक्स कहना या सॉरी कहना कॉमन है, परन्तु हम जो सॉरी कहते हैं वो दुबारा सॉरी कहना ना पड़े, तो अच्छा है। श्रीमत पर चलने वाले को अपनी मनमत चलाने की आवश्यकता नहीं है। श्रीमत क्या है, उसे हम सबने जाना है। सचखण्ड में जाने के लिए बाबा सच्ची बातें सुना करके हर बात से पार लेके जा रहा है। किनारा छोड़ा है तो बीच में नैया भले हिलेगी, डोलेगी पर डूबेगी नहीं। विश्वास से पार होके आ गये हैं।

बुद्धि में कोई प्रकार का तनाव नहीं है, खींचातान नहीं है, बड़ी दिल है, सच्ची दिल रहमदिल है तो और कोई बातें हों भी तो उन्हें छोड़ो तो छूटो। कैसे छोडूँ, क्वेश्चन नहीं है? संगम पर जिन बच्चों ने जीवन सफल किया है, उनकी सफल जीवन को देखकर अनेकों की जीवन सफल हुई है। वह मम्मा बाबा के सिवाए और किसको नहीं देखते, अगर और किसी को देखेंगे तो क्यों और क्या का बड़ा चक्कर शुरू हो जायेगा। साक्षी हो करके देखो कि मम्मा बाबा ने ऐसे कभी क्यों क्या का शब्द मुख से बोला है? कभी चेहरे से भी ऐसा दिखाई दिया है? इस बात में फॉलो करने वाली आत्मायें, अतीन्द्रिय सुख में झूलने वाली आत्मायें खुशी से हाँ जी, जी बाबा करती रहेंगी। आत्मा को परमात्मा से सुख शान्ति और शीतलता की डायरेक्ट प्राप्ति है तो आत्माओं को अनुभव हो जाता है। कोई कितना भी प्रयत्न करे लेकिन उनकी यह लगन टूट नहीं सकती, छूट नहीं सकती है। उसमें एक तरफ विकर्म विनाश हुए तो आत्मा शुद्ध, शान्त हो जाती है।

बाबा क्या सिखा रहा है, वो हमारी सूरत में कहाँ तक आया है? वो देखो। लक्ष्मी-नारायण को वरने जैसी स्थिति है? जो यहाँ सुख-शान्ति प्रेम सम्पन्न आत्मा बन जाए, ऐसे योगी अगर अभी हम बने हैं तो बाबा कहेंगे यह योगेश्वर है। तो अपने ऊपर ऐसी दया, रहम करना अपने लिए सच्चाई है। इसके लिए क्यों, क्या में नहीं आना, इससे टाइम वेस्ट हो जाता है। तुम अपना काम करो, क्या हुआ, कुछ नहीं हुआ, जो हुआ सो अच्छा हुआ। तुम तो अच्छा कर लो। तो हर बात की बाबा ऐसी बुद्धि हमको दे रहा है, जो करके सोचना नहीं है और जो बाबा ने सिखाया है वो करना है। बाबा ने तो सबकुछ सिखाया है, चलना, बोलना, बैठना भी सिखाया है, मुस्कराना भी सिखाया है। जोर से हंसने वाले भी बाबा को अच्छे नहीं लगते हैं। ऐसी ऐसी भूलें भी ज्ञानी तू आत्मा के लिए शोभती नहीं हैं इसलिए अपनी बुद्धि को सोने के बर्तन समान स्वच्छ बनाना है। इतना अच्छा, सच्चा, सयाना, समझदार बनना है।

''स्व पर ध्यान देने वाली आत्मा कभी डरती व कन्फ्यूज़ नहीं होती, उसका चिंतन बड़ा शुद्ध श्रेष्ठ और शुभ भावना वाला होता है'' (2006)

हम सबका जन्म बाबा की दृष्टि से हुआ है, पालना भी दृष्टि से हुई है, बड़े भी बाबा के दृष्टि से हुए हैं। अभी दृष्टि के आधार से हम वाणी से परे जा रहे हैं। दृष्टि और बाबा के बोल जैसेकि ब्राह्मणों का भोजन है। सवेरे-सवेरे बाबा अच्छा ताजा तरावटी और वैराइटी भोजन खिलाता है, जो रूहानियत में रहेंगे वही यह भोजन खा सकेंगे। कौन सुना रहा है? उसको देख करके खायेंगे तो अच्छी तरह से जल्दी हज़म भी हो जायेगा। यह भोजन खाते हल्के हो जायेंगे। तो कितने भाग्यवान हैं।

बचपन के दिन भूला न देना... ऐसे नहीं सेवा में, सम्बन्ध में ईश्वरीय बचपन भूल जाये, वो कभी न भूले। बाबा के महावीर बच्चे कौन हैं? रावण को चैलेन्ज करने वाले विजयी बच्चे ही महावीर हैं। तो महावीर की जो विशेषतायें हैं वह सदा याद रहें। उन्हें एक बाबा के सिवाए दूसरा कोई नज़र नहीं आता। महावीर में वो नज़र आता है जिसके साथ प्यार है, जिसके सहारे चल रहा है, औरों को भी निमित्त बनके चला रहा है।

तो हमारे चिंतन में बाबा है, चिंता कोई है ही नहीं। जिसके पास थोड़ी चिंता है, तो दु:ख और भय भी जरुर होगा। जिसके चिंतन में बाबा है, मन बुद्धि में बाबा ही बाबा है, उसको कोई दु:ख नहीं हो सकता। भय भी नहीं होगा कि पता नहीं क्या होगा! जिसके चिंतन में भगवान बैठा है उसका चिंतन बड़ा शुद्ध श्रेष्ठ होगा, शुभ भावना वाला होगा। कोई कामना नहीं परन्तु सबके लिए शुभ भावना। अपने लिए भी कोई कामना नहीं, कुछ नहीं चाहिए। बाबा को चिंतन में रखने से दु:ख, चिंता मिट जाती है। सुख-शान्ति, शीतलता स्वरूप में आ जाती है। तो प्रोटेक्शन किससे हुई? ईश्वर के चिंतन से, हम सबके लिए शुभचिंतक हैं तो इन्डिपेन्डेन्ट है। निराधार हैं, बाबा की मदद है। लाठी ले करके चलना नहीं पड़ता है। कभी हार की घड़ी आ नहीं सकती है, क्योंकि निश्चय का बल है तो विजय समाई पड़ी है।

स्व की स्थिति पर ध्यान रखने वाली आत्मा पर बाबा का बहुत ध्यान है, जिसका स्व पर ध्यान कम है और बातों में ध्यान बहुत है, और सब बातों में बहुत होशियार है, लेकिन स्व पर ध्यान कितने परसेन्ट है? स्वयं की कमजोरी स्वयं में अभी तक है, तो समझो कि परमात्म शक्ति काम नहीं कर रही है। औरों की जो निगेटिविटी है वो हमारे ऊपर छाया की तरह, वायब्रेशन के रूप में अपना प्रभाव डाल रही है, जिस कारण जल्दी घबरा जाते हैं, डरते या कभी कन्फ्यूज़ होते रहते हैं। अगर निश्चय का बल है, तो उससे कितने फायदे हैं, वह लिस्ट सामने रखो। जो निश्चयबुद्धि होगा वह तो कहेगा अरे! यह तो कुछ नहीं है! जितनी प्रालब्ध ऊंची है, परीक्षायें भी तो इतनी आयेंगी। नहीं तो पता कैसे चलेगा! इसलिए बाबा कहते मैं आशीर्वाद नहीं करता हूँ, सिर्फ राय पर चलो। बाप की राय पर चलने वाला बहादुर चाहिए। तो श्रीमत पर चलने वाला कभी मनमत नहीं चलाता।

बाबा के बच्चे पक्के सच्चे तब बनते हैं जब अपनी स्थिति पर ध्यान देते हैं। कभी हलचल में न आयें। अन्दर से अचल अडोल एकरस स्थिति बनाने की तीव्र इच्छा हो। तो वह स्थिति स्व, सेवा और सम्बन्ध में काम करेगी। सेवा में हलचल होगी, मान-अपमान होगा। हम चाहें कुछ और, होवे कुछ और। सम्बन्ध में तू मैं आयेगा। सेवा तो मेरा भाग्य है, सम्बन्ध में अन्दर से सब मेरे बहन भाई हैं, हम एक बाबा के बच्चे हैं। ऐसा शुद्ध पावरफुल वायुमण्डल बनाने की दृष्टि वृत्ति अगर मेरी है तो जैसे बाबा से मैंने सबकुछ पा लिया है। सतयुग में न यह नॉलेज होगी, न कोई वर्णन करेंगे। परन्तु वह सतयुगी दुनिया लाने के लिए बाबा अभी रिहर्सल करा रहा है। एक घर में रहते हुए, एक कमरे में साथ रहते हुए, बाबा के गुणगान करने वाले हैं। अभी तो सबको अच्छी सैलवेशन मिल रही है, सबके पास अपना अच्छा घर है, कुटिया है, शुरू में तो हम सब दादियां इकट्ठे एक ही कमरे में रहती थी। बाबा ने सब रिहर्सल करा दी है। तो बाबा देखता है मेरे बच्चों के दिल में क्या है? क्या सम्बन्धों में नम्रता है? अगर नम्रचित है तो बड़ा सुखी है। पुरुषार्थ में हिम्मत है तो मदद मिलती है, सेवा में शुभ श्रेष्ठ भावना है तो सफलता हुई पड़ी है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

साइलेन्स की शक्ति जमा करो

1) अभी हम सब इस देह से, इस पुरानी दुनिया से, इन 5 तत्वों से भी पार हो साइलेन्स में बैठे हैं। साइलेन्स एक बड़ी पावर है, इसमें सर्व शक्तियाँ समाई हुई हैं। जैसे साइन्स वालों ने साइन्स पावर से शक्तिशाली वस्तुयें बनाई हैं - एटम बाम्ब आदि। तो हम आलमाइटी अथॉरिटी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न परमधाम निवासी हैं। हम आत्मायें पार्टधारी हैं, पार्ट बजाकर अपने घर चले जाने की तैयारी कर रहे हैं। वह आया है पण्डा बनकर हमको साथ ले जाने के लिए। सर्व सम्बन्धों से मुक्त कराकर अपने साथ कनेक्शन भी जुड़ाया है क्योंकि अब घर वापिस जाना है। तो अब यहाँ बैठे भी उस साइलेन्स का अनुभव करना है। जब वहाँ चले जायेंगे तब उस साइलेन्स का अनुभव वर्णन नहीं कर सकेंगे। तो अब शान्ति का अनुभव भी बाप इस ही जीवन में कराते हैं।

2) जितना-जितना हम मन-बुद्धि को 5 तत्वों से पार ले जायेंगे तो जो स्वीट साइलेन्स होम है, वहाँ जाकर निवास करेंगे। और लाइट-माइट का अनुभव करेंगे। जैसे सितारे आकाश तत्व के अन्दर अपने-अपने स्थान पर चमकते रहते हैं, वैसे हम भी ब्रह्म तत्व में जाकर बाप के साथ उस साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। बाप को इन आंखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन उसके कर्तव्य द्वारा, उनके गुणों द्वारा, शक्तियों द्वारा उसका अनुभव होता है। तो जितना हम उसमें स्थित रहेंगे उतना ही हम उस साइलेन्स पावर का अनुभव करेंगे। उस याद से हमारे अनेक जन्म के विकर्म विनाश होते हैं और मन के संकल्प-विकल्प भी मर्ज हो जाते हैं। मास्टर आलमाइटी की स्टेज का अनुभव होता है। जितना-जितना अभ्यास करते जायेंगे उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे। जो वाचा द्वारा हम सर्विस नहीं कर पाते, वह हम समर्थ संकल्प द्वारा दूर वाली आत्माओं की सेवा कर सकते हैं। बाबा कहते हैं आपके बहुत भक्त हैं, जो आपका आह्वान कर रहे हैं, प्यासे हैं। तो वे हमारी झलक को कब देख सकते हैं? जब हम एकाग्र अवस्था में रहेंगे। हमारा सकंल्प उतना चले जो समर्थ हो, व्यर्थ न आवे। वाचा भी उतनी ही चले जो समर्थ हो, सेवा अर्थ हो - व्यर्थ न जावे। ऐसा गुप्त पुरुषार्थ चाहिए। बुद्धियोग की लाइन क्लीयर हो, बुद्धि पवित्र हो तो बाप की प्रेरणाओं को, बाप की पावर को कैच कर सकते हैं।

3) जब हम देह से निकल बाप को याद करते हैं तो बुद्धियोग जुट जाता है तब ही बाप से हम सर्वशक्तियों का अनुभव कर सकते हैं। जब हम इस 5 तत्वों से पार हो जाते हैं। पृथ्वी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, जब ही हम रीयल शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।

4) हम दुनिया की निगाहों से दूर, आवाज से परे परम शान्ति का अनुभव करते हैं, तो आवाज में आना पसन्द नहीं आता। हम सिर्फ पार्ट बजाने के लिए कर्मेन्दियों का आधार लेकर आते हैं – ऐसे अनुभव होगा।

5) इस साइलेन्स की शक्ति से क्विक सर्विस कर सकते हैं। साइलेन्स पावर दूर-दूर में जाकर काम करेगी। बाबा कहते थे बच्चे तुम विश्व कल्याणी हो। तो हमारा विचार चलता कि हम सारे विश्व की सेवा कैसे करेंगे। जब साइलेन्स पावर कई जन्मों के विकर्मों को भस्म कर सकती है तो विश्व की आत्माओं की सेवा क्यों नहीं कर सकती। हम सूक्ष्म में किसी भी आत्मा को बुला सकते हैं, उनसे रूह-रिहान कर सकते हैं, उसकी लाइट-माइट का दान दे सकते हैं। साइलेन्स पावर से ऐसा औरों को अनुभव होगा। सेन्टर पर पांव रखेंगे तो जैसे उन्हों को सन्नाटा महसूस होगा। महसूस होगा कितनी शान्ति है।

6) यह बहुत मीठी अवस्था है। इससे बहुत शान्ति, अतीन्द्रिय सुख की महसूसता होती है। साइलेन्स पावर अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति। हमारी सिर्फ साइलेन्स नहीं हैं लेकिन हमारी ओरिज्नल स्टेज जो बाप समान स्टेज है, उसमें स्थित होना है। ओरिज्नल स्टेज है मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति, जिसमें कोई भी संकल्प की उत्पत्ति नहीं होती है, जिसको दूसरे शब्दों में बीजरूप की स्थिति कहेंगे। हम भी बिन्दु हैं बाबा भी बिन्दु है, हम बाबा के साथ कनेक्शन जोड़े, सर्व शक्तियों के स्टॉक को जमा करें। जैसे बाप विश्व कल्याणी है वैसे हम बच्चे हैं, उसको लाइट माइट अर्थात् शान्ति का पुंज कहें। वह माइट हाउस अर्थात् सर्व शक्तियों से भरपूर होगा। उसकी स्थिति द्वारा सेवा होती रहेगी। दृष्टि द्वारा निराकारी स्थिति का साक्षात्कार होता रहेगा। ओम् शान्ति।